PART-**1**

यूनानी भूगोलवेत्ता- हिप्पार्कस

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

यूनानी भूगोलवेत्ता (Greek Geographers)

पृथ्वी के विभिन्न भागों के पर्यावरण और उनके निवासियों की जीवन पद्धति पर वर्णनात्मक लेखन का आरंभ यूनान में नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में हो गया था । तत्कालीन महाकवि होमर (Homer) की दो काव्य रचनाओं में महत्वपूर्ण भौगोलिक वर्णन मिलते हैं। इसके पश्चात् के वर्षों में थेल्स (Thales), अनेग्जीमैण्डर (Anaximander), हेकैटियस् (Hecataeus), हेरोडोटस (Herodotus), अरस्तू (Aristotle), थियोफ्रेस्टस (Theophrastus), इरेटोस्थनीज (Eratosthenes), पोलीबियस (Polybius), हिप्पारचुस (Hipparchus), पोसिडोनियस (Posidoneus) आदि प्रमुख यूनानी विद्वानों ने भौगोलिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अग्रांकित पंक्तियों में इन यूनानी विद्वानों के योगदानों की संक्षिप्त चर्चा की गयी है।

(11) हिप्पार्कस (Hipparchus)

हिप्पार्कस (जन्म 150 ई० पू०) इरेटोस्थनीज के पश्चात् अलेक्जण्डरिया संग्रहालय के पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त हुए थे। वे मूलतः एक खगोलशास्त्री थे और उन्होंने नक्षत्रों के वेध के लिए एक चक्रयंत्र का निर्माण किया था जिसका नाम एस्ट्रोलैब (Astrolabe) था उन्होंने प्रथम बार बराबर दूरी पर खींची गयी अक्षांश और देशांतर रेखाओं के जाल पर मानचित्र बनाया था। सर्वप्रथम हिप्पार्कस ने ही वृत्त को 360 अंशों में विभक्त किया था । उन्होंने विषुवत रेखा को पृथ्वी का बृहुत वृत्त (great circle) बताया और यह भी स्पष्ट किया कि भूमध्य रेखा से उत्तर और दक्षिण की ओर अक्षांश वृत्तों की लम्बाई क्रमशः घटती जाती है।